साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 28, जनवरी(प्रथम), 2018

क्या आप लड़की देखने जा रहे हैं

- निकेश कुमार

क्या कहा ,आप लड़की देखने जा रहे हो
बेशक जाओ मगर
क्या लगता नहीं मुझे डर

उसकी हाथों से कांपते चाय के प्यालों को, देख पाओगे तुम ?
उसकी आंखों की नमकीन पसीने को, महसूस कर पाओगे तुम ?
उसके अंतर्मन के ज्वार–भाटा को आंख पाओगे तुम ?
उस चेहरे के सिकन को, पहचान पाओगे तुम ?

उसका बार-बार हथेली कुरेदकर नई रेखा बनाना, समझ पाओगे तुम ?
या, उसके झुके मस्तक पर परंपरा का दबाव, महसूस कर पाओगे तुम ?
और एक पल को तुमसे मिली उसकी नजरें
क्या कह गई चुपचाप, शब्दों में उतार पाओगे तुम ?

यदि नहीं, तो कुछ ऐसा करो
की उसे ना देखो केवल तुम
वह भी देखें तुम्हें
और महसूस करें, अपने प्रश्नों को
तुम्हारी भी आंखों में।